श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष 75

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

Address
Here

अगस्त - चतुर्थ, अंक - 24 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

शिव संदेश

वास्तविक बल

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

हम कौन हैं और हमारा बल क्या है इसका स्पष्टतः प्रबोध होना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। जब व्यक्ति इससे अनभिज्ञ होता है तब वह अज्ञानता की स्थिति में अपने आप को अन्यथा रूप से समझने लगता है। उसकी यह समझ अन्ततः दुख का मूल हेतु बन जाता है। यही कारण है कि व्यक्ति यह समझता है कि जाति-बल, धन-बल, मित्र-बल यही मेरा बल है। वह यह भूल जाता है कि ये वास्तविक बल नहीं हैं, वास्तव में तो आत्मबल ही मेरा बल है। लेकिन भ्रान्ति के कारण वह उन सारे बलों को बढ़ाने के लिए अनेक पाप कर्मों का उपार्जन करता है, अनंत अशुभ कर्म वर्गणाओं को एकत्रित करता है जिससे उसका वास्तविक आत्मबल क्षीण होता है। जाति, मित्र, शरीर, धन इन सभी बलों को बढ़ा करके भी वह चिंतित और भयभीत रहता है कि कहीं मेरा यह बढ़ाया हुआ बल क्षीण न हो जाए। उसका यह डर इस बात का सूचक है कि जिस बल को उसने बढ़ाया है वह वास्तविक बल नहीं है।

वास्तविक बल तो अपने साथ अभय लेकर के आता है। आत्मबल जितना बढ़ता है उतना ही अभय का विकास बढ़ता है। बाकी सारे बल भय बढ़ाते हैं। जितना व्यक्ति भयभीत होगा उतना ही वह सुरक्षा चाहता है। बाहर का बल जितना ही बढ़ता है उतना ही भय भी बढ़ता है। और उस भय के पीछे सुरक्षा की आवश्यकता भी उसे महसूस होती है। इस प्रकार जितना वह बाह्य रूप से बलवान होता है उतना ही भयभीत और उतनी ही सुरक्षा की आवश्यकता अनुभव करता है।

भगवान महावीर ने अभय और आत्मबल की साधना की। वह चाहते तो किसी का सहारा ले सकते थे। लेकिन उन्होंने किसी का सहारा या किसी की सुरक्षा न ली। क्योंकि वे जानते थे कि बाह्य बल बढ़ाने से आत्मबल नहीं बढ़ता और किसी का सहारा लेने पर आत्मबल का विकास नहीं होता और बिना आत्मबल के ज्ञान का जागरण नहीं होता। इसलिए वे सारे सहारे छोड़कर आत्मबल आश्रित/आत्मनिर्भर बन गए। जैसे कहा जाता है कि श्रमण स्वावलंबी होता है। अर्थात् वह किसी दूसरे के बल पर, व्यक्ति-वस्तु या परिस्थिति के बल पर नहीं खड़ा अपितु स्वयं अपने बल पर खड़ा हुआ है। जो दूसरे के बल पर खड़ा हुआ है वह सदैव दूसरों को खुश रखने के लिए प्रयत्नरत रहता है। जिस हेतु पापकर्म या माया का सेवन भी वह कर लेता है। आत्मबल की वृद्धि के लिए सत्य, अहिंसा और साधना का मार्ग है। भगवान का मार्ग वीरों का मार्ग है। वीर वह है जो अपने आत्मबल पर आश्रित रहता है।

अध्यक्षीय

रक्षा के धागे से आत्मीयता के संकल्प तक

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

'जैन प्रकाश' साप्ताहिक समाचार पत्र के सभी प्रबुद्ध पाठकों, साधर्मिक बंधुओं और संपूर्ण देशवासियों को रक्षाबंधन के पवित्र पर्व की अनंत शुभकामनाएं। यह पावन अवसर मात्र रेशम के कच्चे धागों का त्योहार नहीं है, बल्कि यह प्रेम, समर्पण, सुरक्षा और अटूट विश्वास का एक शाश्वत बंधन है, जो हमें हमारे सामाजिक, पारिवारिक और आध्यात्मिक कर्तव्यों का गहराई से बोध कराता है। रक्षाबंधन का पावन पर्व भारतीय संस्कृति में प्रेम, विश्वास, स्नेह और पारस्परिक संरक्षण की भावना का प्रतीक है। यह पर्व हमें केवल भाई-बहन के रिश्ते की मर्यादा का स्मरण नहीं कराता, बल्कि समाज में एक-दूसरे के प्रति कर्तव्य, संवेदना और उत्तरदायित्व निभाने का संदेश भी देता है।

जैन धर्म का इतिहास अत्यंत प्राचीन, वैज्ञानिक और गौरवशाली है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर चरम तीर्थंकर भगवान महावीर तक, हमारी श्रमण परंपरा ने संपूर्ण विश्व को 'अहिंसा परमो धर्मः', 'अनेकांतवाद' और 'जीओ और जीने दो' का जीवनदायी संदेश दिया है। हमारी यह ऐतिहासिक विरासत केवल सैद्धांतिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सर्वोदय और प्राणी मात्र के कल्याण की भावना पर आधारित जीवन जीने की एक उत्कृष्ट कला है।

रक्षाबंधन के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जैन परंपरा का योगदान अत्यंत विशिष्ट और प्रेरणादायी है। हमारे धर्मग्रंथों में वर्णित मुनि विष्णुकुमार जी का ऐतिहासिक वृत्तांत इसका जीवंत प्रमाण है। जब हस्तिनापुर में अभिमानी मंत्री नमुचि ने अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों के चारों ओर भयंकर अग्नि जलाकर उन पर घोर उपसर्ग किया था, तब मुनि विष्णुकुमार जी ने अपने विशिष्ट तपोबल का प्रयोग करते हुए वामन रूप धारण किया और उस महा-उपसर्ग को दूर कर मुनि संघ के प्राणों की रक्षा की थी। जिस दिन श्रवण संघ की रक्षा का यह महान कार्य संपन्न हुआ, वह श्रावण मास की पूर्णिमा का ही दिन था। इसी ऐतिहासिक घटना के स्मरण में जैन परंपरा में रक्षाबंधन को धर्म की रक्षा, गुरुओं की रक्षा और मानवता की रक्षा के महापर्व के रूप में मनाया जाता है।

आज के भौतिकवादी युग में, जब समाज अनेक वैचारिक और नैतिक चुनौतियों से गुजर रहा है, हमें जैन धर्म के इस ऐतिहासिक और आध्यात्मिक संदेश को पुनः आत्मसात् करने की आवश्यकता है। यह पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हमें केवल अपनी बहनों और परिजनों की ही नहीं, बल्कि अपने वीतराग सिद्धांतों, प्राचीन संस्कृति, पर्यावरण, असहाय मूक जीवों और मानवीय मूल्यों की भी रक्षा का संकल्प लेना चाहिए।

राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में, मैं आप सभी से यह विनम्र आह्वान करता हूँ कि हम सब एकजुट होकर समाज में भाइचारा, करुणा और वात्सल्य का विस्तार करें। अनेकांतवाद की वैचारिक ढाल और अहिंसा के अस्त्र से समाज में व्याप्त वैमनस्य को समाप्त करें।

सम्पादकीय

भोजन की पसंद पर विवाद क्यों? संस्कृति बचाना भेदभाव नहीं

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

मुंबई के तारदेव की 'Vegetarian Only' प्रॉपर्टी लिस्टिंग ने छेड़ी बहस-विविधता में सह-अस्तित्व ही भारतीय लोकतंत्र की पहचान!

13-17 अगस्त 2026 Times of India, NDTV, Free Press Jmournal एवं अन्य समाचार माध्यमों में प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार दक्षिण मुंबई के पॉश तारदेव क्षेत्र में लगभग 6.5 करोड़ मूल्य के एक 2BHK फ्लैट की प्रॉपर्टी लिस्टिंग में "Vegetarian Only" की शर्त सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर तीखी बहस छिड़ गई। लगभग 900 वर्गफुट के इस फ्लैट के वीडियो में केवल शाकाहारी ग्राहकों के लिए संपत्ति उपलब्ध होने की बात कही गई थी। इस पर कुछ लोगों ने इसे आवासीय भेदभाव और "Food Apartheid" तक कहा। बाद में संबंधित रियल एस्टेट एजेंट ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि यह शर्त फ्लैट-मालिक की अपेक्षा थी और विवाद बढ़ने के बाद उन्होंने माफी भी मांगी।

यह घटना केवल मुंबई के एक फ्लैट की कहानी नहीं है। इसके भीतर एक बहुत बड़ा प्रश्न छिपा है-क्या अपनी जीवन-पद्धति, आहार-संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप रहने की सामुदायिक इच्छा को भी भेदभाव कह दिया जाएगा? मेरा व्यक्तिगत मत स्पष्ट है-अपनी संस्कृति की रक्षा करना भेदभाव नहीं है, दूसरे की संस्कृति का अपमान करना भेदभावपूर्ण मानसिकता हो सकती है।

भारत की शक्ति एकरूपता में नहीं, विविधता में है-भारत की सभ्यता सहस्राब्दियों से विविधताओं के सह-अस्तित्व की भूमि रही है। यहाँ अलग-अलग धार्मिक परंपराओं, सम्प्रदायों, भाषाओं, जातीय-सामुदायिक समूहों और जीवन-पद्धतियों के लोगों ने अपनी-अपनी सामाजिक संरचनाएँ विकसित कीं। कहीं जैन बहुल बस्तियाँ रहीं, कहीं वैष्णव अथवा सिख समुदायों के विशिष्ट आवासीय क्षेत्र बने, कहीं पारसी समुदाय ने अपनी सांस्कृतिक पहचान के अनुरूप जीवन-परिवेश सुरक्षित रखा। यह विविधता भारत की कमजोरी नहीं, उसकी सामाजिक जीवंतता है।

जैन समाज के लिए तो शाकाहार केवल भोजन की पसंद नहीं है। वह अहिंसा, जीवदया, अपरिग्रह, संयम और करुणा से जुड़े जीवन-दर्शन का अंग है। जिस परिवार ने पीढ़ियों से अपनी रसोई को अहिंसामूलक आहार के अनुरूप रखा है, उसके लिए यह स्वाभाविक है कि वह अपने निवास का वातावरण भी उसी जीवन-पद्धति के अनुकूल रखना चाहे। यदि जैन समाज के लोग मिलकर ऐसी आवासीय सोसाइटी बनाना चाहते हैं जहाँ सभी परिवार शाकाहारी हों, जैन जीवन-मूल्यों का सम्मान करते हों और समान सांस्कृतिक वातावरण में रहना चाहते हों, तो इस इच्छा को केवल 'भेदभाव' कहकर समाप्त कर देना उचित नहीं होगा। (शेष पृष्ठ 5 में)

M.J. Home Furnishing
Manufacturer of Bedsheet, Mink Blanket, Bright Velvet
Dohar, Polar Blanket, AC Quilt Fabric
Alipur Khalsa, Khotpura Road, Kohand, Karnal
Mob: 8053018933, 8727890101
E-mail: mjhome025@gmail.com
Vijay Jain
National Chairman - Jain Conference, New Delhi

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन कान्फ्रेंस के विश्वस्त मंडल (Board of Trustees) के गठन की सूचना

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के नव संशोधित संविधान में प्रदत्त प्रावधानों के अंतर्गत, **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन** के द्वारा कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मंडल (Board of Trustees) का विधिवत गठन किया गया है।

नव गठित विश्वस्त मंडल में संगठन की संस्थागत निरंतरता, अनुभव, क्षेत्रीय संतुलन तथा विभिन्न क्षेत्रों की विशेषज्ञता को ध्यान में रखते हुए प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है। विश्वस्त मंडल में वर्तमान पदाधिकारियों, पूर्व पदाधिकारियों, पांचों क्षेत्र (जोन) के प्रतिनिधि, श्रमण संघ प्रतिनिधि, प्रोफेशनल, उच्च शिक्षाविद, दानदाता, जैन दर्शन के जानकार, महिला एवं युवा प्रतिनिधियों को संविधान के अनुसार सम्मिलित किया गया है।

नवगठित विश्वस्त मंडल का कार्यकाल संशोधित संविधान के प्रावधानों के अनुसार गठन की तिथी से पाँच वर्ष का होगा।

नवगठित विश्वस्त मंडल के माननीय सदस्यगण

पदेन सदस्य - सभी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष (6 सदस्य)

श्री जे. डी. जैन
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन
पाली (राजस्थान)

श्री अविनाश चोरड़िया जैन
नई दिल्ली

पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

श्री पारस मोदी जैन
मुंबई (महाराष्ट्र)

श्री आनंदमल छल्लानी जैन
चेन्नई (तमिलनाडु)

पदेन सदस्य - वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष (3 सदस्य)

श्री अतुल जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
दिल्ली

डॉ. अमित राय जैन
राष्ट्रीय महामंत्री
बड़ौत (उत्तर प्रदेश)

श्री विनय जैन
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
पानीपत (हरियाणा)

जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व पदाधिकारियों में से वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा मनोनीत (4 सदस्य)

श्री जसवंत जैन
दिल्ली

श्री संजीव हीरालाल जैन
लुधियाना (पंजाब)

श्री महावीर रांका जैन
चेन्नई (तमिलनाडु)

श्री जयंती कुकड़ा जैन
सूरत (गुजरात)

वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा मनोनीत प्रत्येक जोन से एक (5 सदस्य)

श्री विनोद कीमती
हैदराबाद (तेलंगाना)
जोन-1

श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन
दिल्ली - जोन-2

श्री रमेश भंडारी जैन
इंदौर (मध्य प्रदेश)
जोन-3

श्री कांति कुमार तोढ़ा जैन
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
जोन-4

श्री नरेश बोहरा जैन
मुंबई (महाराष्ट्र)
जोन-5

वर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा द्वारा नियुक्त (3 सदस्य)

श्री प्रशांत जैन
दिल्ली

श्री कंवरलाल सूर्या जैन
भीलवाड़ा (राजस्थान)

श्री अशोक रांका जैन
बेंगलुरु (कर्नाटक)

श्रमण संघ के प्रतिनिधि, आचार्यश्री द्वारा मनोनीत (1 सदस्य)

श्री रविन्द्रनाथ जैन
दिल्ली

श्रमण संघ के प्रतिनिधि, युवाचार्यश्री द्वारा मनोनीत (1 सदस्य)

श्री विपुल जैन
दिल्ली

विशेष / प्रोफेशनल प्रतिनिधि (1 सदस्य)

श्री विलास राठौर जैन
पुणे (महाराष्ट्र)

उच्च शिक्षाविद (1 सदस्य)

डॉ. अनामिका तलेसरा जैन
सूरत (गुजरात)

दानदाता प्रतिनिधि (2 सदस्य)

श्री विजय जैन
पानीपत (हरियाणा)

श्री सुदर्शन जैन
दिल्ली

जैन दर्शन के विशेष जानकार (1 सदस्य)

श्री शशिकांत पिंटू कर्नावट जैन
मालेगांव (महाराष्ट्र)

महिला प्रतिनिधि (1 सदस्य)

श्रीमती संतोष जैन
दिल्ली

युवा प्रतिनिधि (1 सदस्य)

श्री अंकुर जैन
दिल्ली

विश्वस्त मंडल का गठन कॉन्फ्रेंस की संस्थागत निरंतरता, संगठनात्मक स्थायित्व, पारदर्शिता एवं भविष्य की योजनाओं को मजबूत आधार प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। विश्वस्त मंडल के माध्यम से संगठन की दीर्घकालीन संपत्तियों, संस्थागत परंपराओं एवं सामाजिक–धार्मिक सेवा गतिविधियों को और अधिक व्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा।

– डॉ. अमित राय जैन (राष्ट्रीय महामंत्री)

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

जैन कॉन्फ्रेंस की सदस्यता एवं जैन कॉन्फ्रेंस की विविध योजनाओं के फॉर्म के लिए स्कैन करें :

जैन कॉन्फ्रेंस आजीवन सदस्यता फॉर्म
जीवन प्रकाश योजना उच्च शिक्षा सहायता फॉर्म
जीवन प्रकाश योजना चिकित्सा सहायता फॉर्म
मानव सेवा योजना (विधवा पेंशन फॉर्म
जीवदया योजना फॉर्म

श्री मरूधर केसरी गुरूभ्यो नमः
देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में
नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर
HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd.

जय गुरू रूप

जय गुरू मरूधर केसरी

जय गुरू सुकन

कोटिशः वंदन नमन

नरेश बोहरा जैन
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान
7666540600 Jainn07@gmail.com

कथा-कहानी

योगिराज की कहानियाँ

-प्रवर्तक पू. श्री सुभद्र मुनि

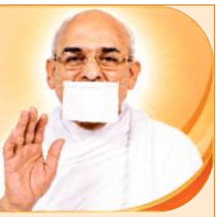

युवराज होने का अधिकार

राजा था एक। तीन थे उसके पुत्र। राजा की आयु ढलने लगी तो वात्सल्य उमड़ आया उसके अंतर में। अब वह किसे अपना उत्तराधिकारी घोषित करे। समस्या टेढ़ी इसलिए भी हो गई कि सहसा किसी एक को उत्तराधिकारी घोषित कर दे तो प्रजा न्याय-अन्याय को समझ न पाएगी। उलटा मुझ को दोषी ठहरा देगी और कहेगी राजा ने मोहवश एक को उत्तराधिकारी बना दिया। प्रजा के सामने प्रश्न रख दिया-आप लोग मेरे बाद किस राजकुमार को अपना उत्तराधिकारी बनाना पसंद करेंगे? मंत्रणा के बाद तय किया गया तीनों राजकुमारों की परीक्षा करनी चाहिए। जो श्रेष्ठ लगे उसे युवराज घोषित किया जा सकता है।

बात सबकी समझ में आ गई। एक दिन राजा ने तीनों राजकुमारों को बुलाया और उन्हें सौ-सौ रुपये देते हुए कहा राजमहल में तीन कमरे खाली पडे हैं। इन रुपयों से अपना-अपना कमरा पूरा-पूरा भर दो। अब तुम्हारा कौशल देखना है, तुम कैसे भरते हो उन्हें। सौ-सौ रुपये तीनों राजकुमारों को मिल गए। एक राजकुमार जरा दिवा-स्वप्न में रहता था। उसने सोचा-सौ रुपये बहुत कम हैं। इन्हें बढ़ाना चाहिए। वह जुआ खेलकर सौ रुपयों को हजारों में परिवर्तित कर बहुमूल्य वस्तुओं से अपने कमरे को भरना चाहता था। अतः उसने जुआ खेला और जुए में सब रुपये हार बैठा। कमरे में वह कुछ भी न भर सका।

दूसरा राजकुमार सौ रुपयों को उछालता खुशी से भरा-भरा जा रहा था बाजार में कुछ खरीद लाने को कि तुरंत कमरा भर कर राजा को प्रसन्न कर युवराज पद प्राप्त कर ले। उसने उसी दिन कूड़े से भरी गाड़ी जाती देखी। गाड़ी वाले से कहा-कहाँ ले जा रहे हो यह कूड़ा? वह बोला-फेंकने जा रहा हूँ। दूसरा राजकुमार बोला-इसे फेंको मत। मुझे कूड़े की जरूरत है। मैं तुम्हें सौ रुपये दूँगा। मेरे कमरे में गाड़ी खाली कर दो। गाड़ीवान राजी हो गया। उसे सौ रुपये भी मिलने थे। साथ ही नगर से दूर जाकर कूड़ा डालने की मेहनत भी बच रही थी। दूसरे राजकुमार ने कूड़े की गाड़ी से अपना कमरा भर लिया और बंद कर दिया कमरे का दरवाजा।

तीसरा राजकुमार सोच में पड़ गया कि शाम तक पिता ने सौ रुपये में कमरा भर देने को कहा है तो कुछ रहस्य ही होगा-इसमें सौ रुपये में ऐसा क्या खरीदा जा सकता है, जिससे कमरा पूरा भरा-भरा लगे। दिन ढलने को आया। उसे एक युक्ति सूझी। वह तत्काल उठा और बाजार गया। एक रुपये में तीन चीजें खरीद ली। तेल खरीदा 50 पैसे का, रूई खरीदी 25 पैसे की और 25 पैसे में मिट्टी के दिये खरीदे। सब दियों में तेल डाला। रूई की बत्ती बनाई। पूरे कमरे में दीपावली की तरह स्थान-स्थान पर दीप रख दिये और उन्हें प्रज्ज्वलित कर दिया। अंधेरा आसमान से जमीन पर फैलने लगा तब वह अपने पिता के पास गया। नमस्कार किया और बोला-आपने सौ रुपयों में कमरा भर देने को कहा था। मैंने वैसा करने का प्रयास किया है निरीक्षण कर लें।

राजा ने पहले और दूसरे राजकुमारों के बारे में पता किया। वे दोनों भी उपस्थित हो गए। राजा ने तीनों से एक साथ कहा-मैंने तुम्हें एक साथ सौ-सौ रुपये दिये थे। अब एक तो कह रहा है मेरा कमरा देख लो। तुम दोनों की क्या तैयारी है?

दूसरा राजकुमार बोला-मेरा भी कमरा भरा हुआ है। मैं भी दिखाने को तैयार हूँ। पहले से पूछा तो वह बोला- मैं सौ रुपयों में नहीं एक हजार रुपयों में अपना कमरा भरा हुआ दिखा पाऊँगा। इन सौ रुपयों को एक हजार बनाना चाहता था, पर जुए में उन सौ रुपयों को मैं हार चुका हूँ। राजा बोला-चलो, तुम्हारी परीक्षा तो हो चुकी। दूसरे ने अपना कमरा राजा को दरवाजा खोलकर दिखलाया। राजा बड़ा नाराज हुआ। क्योंकि उसके कमरे से बदबू आ रही थी। वह बुरी तरह से गंदगी से सड़ रहा था।

तीसरे राजकुमार ने कहा-पिताजी मेरा कमरा भी देखें। राजा ने उसका कमरा खुलवाया तो पूरा कमरा प्रकाश से जगमगा रहा था। राजा ने प्रजा को बुलाया और तीसरे राजकुमार को युवराज घोषित करते हुए कहा-मैं तुम्हें एक बुद्धिमान युवराज दे रहा हूँ। यह तुम्हारा भावी राजा होने योग्य है। प्रजा युवराज राजकुमार की जय बोलती हुई खुशी-खुशी अपने-अपने घर की ओर चली गई।

श्रमण संघीय पूज्य संत परंपरा का एक दुर्लभ चित्र श्रृंखला...

चित्र परिचय (बाएं से दाएं) वर्तमान आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज, आचार्य सम्राट पूज्य श्री देवेंद्रमुनि जी महाराज, श्रमण संघीय महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद' एवं राजस्थान प्रवर्तक पूज्य श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'।

पवित्र और मांगल्य का पर्व-रक्षाबंधन

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

भारतवर्ष में पर्व की संकल्पना विशेष प्रयोजन द्वारा प्रस्थापित है। प्रत्येक पर्व के साथ विशिष्ट सोच, लक्ष्य रहा हुआ है। इन त्यौहारों (पर्वों) में मानव मन से निगडित अनेक भावनाओं के परिमार्जन, परिष्कार का विशेष सामर्थ्य निहित है। संस्कारगत वासना विकार को परिस्थिति-वातावरण से आये कल्मष-कटुता को दूर करने की सहज प्रक्रिया इन पर्वों में होती है। पाश्चात्य विचारों- पद्धतियों के प्रभाव तथा मार्केटिंग, कमर्शियल, विज्ञापन के युग में पर्व के साथ जुडी विशेष शक्तियाँ कमजोर हुई है। सभी पर्वों में व्यापार-व्यवसाय का वर्चस्व बढ़ा हुआ है। तथापि, भारतीय संस्कृति के कतिपय पर्व आज भी हमें अपनी समृद्ध, अपनत्व से सराबोर विरासत की स्मृति कराते हैं। इन्हीं पर्वों में एक विशिष्ट पर्व है 'रक्षाबंधन'।

जिस बंधन में रक्षा की भावना है। जो सूत्र अपने आप में विशेष, बल रखता है, उस सूत्र के (धागे के) बल का अनुभव कराने वाला यह पर्व है। वासनायुक्त संबोधन को (भावों को) पावित्र में रूपान्तरित करने वाला यह पावन पर्व है। शारीरिकर सामर्थ्य, के मिथ्या अभिमान को, वासना के आवेग को, क्षणिक सुख के लिए लालायित मानस को, परिपूर्ण चेतना-संवेदना से युक्त व्यक्ति को भोग्य वस्तु समझने का अपराध करने वाली वृत्ति को परिष्कृत करने का, संयमित करने का अदभुत सामर्थ्य इस पर्व तथा कच्चे धागे में है।

निर्बल का बल, असहाय को सहयोग, अशक्त को मदद का संकेत करने वाला यह पर्व है। जो जरूरतमंद है, तन-धन से कमजोर है, उनके प्रति आत्मीयतापूर्ण सहयोग का भाव रक्षाबंधन है। आत्मीयता का, सहयोग का यह पावन पर्व है। इसे औपचारिकता का स्वरूप प्राप्त हो रहा है। अनेक प्रकार के महंगे उपहारों के विज्ञापनों द्वारा भाई-बहन के विशेष खट्टे-मीठे प्यार का दोहन किया जा रहा है। भावों का व्यापारीकरण हो गया है। इस रक्षा सूत्र के पीछे निहित वासनारहित प्रेम की भावनाओं को दुर्लक्षित करके इसे जो औपचारिकता का, लेन-देन का रूप दिया गया कि हिंसा और वासना के इस दौर में देख रक्षाबंधन पर्व के पावित्र तथा सामर्थ्य को ध्यान में लेकर हम इसे जितना उत्साह, उमंग, आनंद के साथ सही तरीके से मनायेंगे, उतना ही यह पर्व मानव मन को निर्मल बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

जैन गौरव

डॉ. राजमल कासलीवाल

नेताजी सुभाषचंद्र बोस के निजी चिकित्सक रहे तथा Whos who in the world उल्लिखित एवं देश में चिकित्सा के उत्कृष्ट पुरस्कार बी.सी. राय अवार्ड से सम्मानित डॉ. राजमल कासलीवाल पुत्र श्री मुंशी प्यारेलाल कासलीवाल का जन्म 20 नवम्बर 1906 में जयपुर (राजस्थान में हुआ। 1929 में लखनऊ वि.वि.से. एम.बी.बी.एस. पास करने के बाद आप उच्च शिक्षार्थ इंग्लैण्ड चले गये, जहाँ से 1931 में डी.टी.एम. एण्ड एच. तथा 1932 में लंदन से एम.आर.सी.सी. की उपलब्धियाँ प्राप्त की। 1935 में इंडियन मेडीकल सर्विसेस के अंतर्गत आप भारतीय सेना में सम्मिलित हुए जहाँ लेफ्टीनेंट कर्नल तक विभिन्न पदों पर कार्य किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध में आपको मलाया भेजा गया, जहाँ नेताजी सुभाषचंद्र बोस से आपकी भेंट हुई। नेताजी की देशभक्ति से आप में देशभक्ति की भावनायें हिलोरे लेने लगी। इधर नेताजी भी आपकी सेवाओं से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होने का आग्रह किया। कासलीवाल जी तत्काल आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हो गये, जहाँ 1945 तक आप निदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा के पद पर रहे। आप नेताजी के निजी चिकित्सक भी थे।

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

प्रमाद से प्रमोद
सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार
लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 30

श्वास का नाभि से जुड़ना-आंतरिक परिवर्तन की कुंजी
(गहन विस्तार)

श्वास को देखना एक चरण है। नाभि को महसूस करना दूसरा। पर जब श्वास और नाभि जुड़ जाते हैं, तो भीतर एक गहरा परिवर्तन प्रारंभ होता है। यह केवल शारीरिक अभ्यास नहीं है। यह अहंकार से अस्तित्व तक उतरने की प्रक्रिया है।

1. श्वास और नाभि का संबंध : सामान्यतः तनाव में श्वास छाती तक सीमित रहती है। नाभि स्थिर नहीं रहती, बल्कि हल्का तनाव अनुभव करती है। जब व्यक्ति सचेत रूप से श्वास को पेट तक ले जाता है, तो नाभि का क्षेत्र सक्रिय होता है। यह सक्रियता स्थिरता लाती है।

2. सिर से उतरने की प्रक्रिया : ऊर्जा सिर में हो तो विचार तेज होते हैं। ऊर्जा नाभि में हो तो मन शांत होता है। श्वास वह सेतु है जो ऊर्जा को ऊपर से नीचे लाता है। हर गहरी श्वास के साथ जैसे ध्यान धीरे-धीरे नीचे उतरता है।

3. कर्ताभाव का नरम होना : जब ध्यान सिर में होता है, तो "मैं" मजबूत होता है। जब ध्यान नाभि में आता है, तो "मैं" थोड़ा ढीला होता है। क्योंकि नाभि अनुभव कराती है-जीवन घट रहा है। आप केवल कर्ता नहीं, एक सहभागी हैं।

4. श्वास-नाभि अभ्यास की विधि : सीधे बैठें। रीढ़ सहज सीधी हो। आँखें बंद करें। धीरे-धीरे श्वास लें। महसूस करें कि श्वास पेट तक जा रही है। नाभि हल्की-सी बाहर आती है। धीरे-धीरे श्वास छोड़ें। नाभि भीतर जाती है। १०-१५ मिनट पर्याप्त हैं।

5. भावनात्मक संतुलन : यदि कोई तीव्र भावना उठे, तो पहले श्वास को नाभि तक ले जाएँ। यह भाव को दबाना नहीं है। यह भाव को आधार देना है। जब आधार मिलता है, तो भाव की तीव्रता कम हो जाती है।

6. नाभि और विश्वास : नाभि का संतुलन भीतर भरोसा जगाता है। जब श्वास वहाँ स्थिर होती है, तो व्यक्ति अनुभव करता है कि उसे हर क्षण सब नियंत्रित नहीं करना है। यह अनुभव धीरे-धीरे जीवन के प्रति खुलापन लाता है।

7. नियमितता का महत्व : एक बार का अभ्यास क्षणिक शांति दे सकता है। पर नियमित अभ्यास तंत्रिका तंत्र की आदत बदल सकता है। धीरे-धीरे शरीर सीखता है कि वह सुरक्षित है।

8. आंतरिक अवरोध का पिघलना : जब श्वास नाभि से जुड़ती है, तो कभी-कभी पुराने भाव उठ सकते हैं। अचानक हल्की उदासी या अनकही स्मृति या गहराई में दबा भय उन्हें रोकें नहीं। श्वास के साथ रहने दें। यह पिघलना है।

9. साक्षी और आधार : श्वास-नाभि का मिलन साक्षी को आधार देता है। अब सजगता केवल विचार में नहीं, शरीर में भी उतरती है। यह समग्र जागरूकता है।

10. अंतिम स्पष्टता : श्वास का नाभि से जुड़ना केवल शांति का अभ्यास नहीं है। यह प्रमाद से वापसी की जीवित प्रक्रिया है। जब श्वास गहरी है और नाभि स्थिर है, तो अहंकार नरम है, भय कम है, और जीवन अधिक सहज है। अगले अध्याय में हम समझेंगे ऊर्जा का ऊपर से नीचे उतरना किस प्रकार समग्र संतुलन लाता है। (क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

प्रो. पीटर फ्लूगेल : लोंकागच्छ से स्थानकवासी श्रमण संघ तक की इतिहास-यात्रा के अंतर्राष्ट्रीय शोधकर्ता

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

जैन धर्म की प्राचीन गैर मूर्ति पूजक स्थानकवासी श्रमण परंपरा, उसके गच्छीय इतिहास और पांडुलिपि - संपदा को वैश्विक अकादमिक जगत में प्रतिष्ठित करने वाले विदेशी विद्वानों में प्रो. पीटर फ्लूगेल का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाना चाहिए। जर्मन मूल के प्रो. फ्लूगेल लंदन विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित SOAS से जुड़े जैन अध्ययन के प्रमुख विद्वान हैं। उनका शोध जैन दर्शन के साथ-साथ जैन साधु-संघ, गच्छ-परंपरा, धार्मिक सुधार आंदोलनों और पांडुलिपि-स्रोतों पर केंद्रित रहा है।

लोंकागच्छ से स्थानकवासी परंपरा तक : प्रो. फ्लूगेल के शोध का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष 15वीं शताब्दी के लोंका से प्रारंभ होने वाली अमूर्तिपूजक श्वेतांबर परंपराओं की ऐतिहासिक यात्रा है। उन्होंने लोंका, लोंकागच्छ, उत्तरवर्ती लोंकागच्छीय साधु-परंपराओं और बाद में विकसित स्थानकवासी तथा तेरापंथ परंपराओं के पारस्परिक संबंधों का गहन अध्ययन किया है। उनके जर्मन भाषा में प्रकाशित शोध में स्थानकवासी परंपरा के इतिहास, संगठन, साधु-परंपराओं, गच्छीय संरचना और धार्मिक अनुशासन का विस्तृत विवेचन मिलता है। विशेष बात यह है कि उन्होंने इस इतिहास को केवल प्रचलित कथाओं के आधार पर नहीं, बल्कि पुरानी पांडुलिपियों, साहित्यिक स्रोतों, साधु-परंपराओं और ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर समझने का प्रयास किया है।

लोंका से प्रारंभ हुई सुधारवादी धारा किस प्रकार विभिन्न साधु-परंपराओं और गच्छों से गुजरती हुई आधुनिक स्थानकवासी समाज एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की स्थापना तक पहुंची-यह उनके शोध का अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। प्रो. फ्लूगेल का शोध इस बात की ओर संकेत करता है कि आज का स्थानकवासी समाज एक अपेक्षाकृत आधुनिक संगठन मात्र नहीं, बल्कि कई शताब्दियों में विकसित हुई साधु-परंपराओं, गच्छों, आचार्य-परंपराओं और धार्मिक सुधार आंदोलनों की दीर्घ ऐतिहासिक परिणति है।

स्थानकवासी पांडुलिपियाँ-इतिहास की अनमोल कुंजी : यहीं से स्थानकवासी समाज की प्राचीन पांडुलिपियों का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है। अनेक ऐतिहासिक ग्रंथ, साधु-परंपराओं के विवरण, गच्छीय वंशावलियाँ, पट्टावलियाँ और धार्मिक साहित्य आज भी विभिन्न निजी संग्रहों, स्थानकों, मठों तथा शोध-संस्थानों में सुरक्षित हैं। शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत में संरक्षित प्राचीन जैन पांडुलिपियों और दुर्लभ दस्तावेजों के प्रति प्रो. फ्लूगेल की विशेष अकादमिक रुचि इसी दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन पांडुलिपियों में छिपी सामग्री का वैज्ञानिक अध्ययन स्थानकवासी परंपरा के इतिहास की अनेक ऐसी कड़ियों को सामने ला सकता है, जो अभी तक व्यापक शोध-जगत के सामने नहीं आई हैं।

इसी उद्देश्य से लंदन विश्वविद्यालय/SOAS के जैन अध्ययन से जुड़े विद्वानों और शहजाद राय शोध संस्थान के बीच प्राचीन पांडुलिपियों के अध्ययन एवं विशेष शोध कार्य को आगे बढ़ाने की दिशा में सहमति बनी है। भविष्य में इन स्रोतों का पाठालोचन, तुलनात्मक अध्ययन, डिजिटलीकरण और ऐतिहासिक संदर्भों के साथ विश्लेषण स्थानकवासी इतिहास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हो सकता है।

इंदौर साधु - सम्मेलन में साधु - साध्वियों के बीच पंद्रह दिन : प्रो. फ्लूगेल का शोध केवल पुस्तकालयों तक सीमित नहीं है। भारत प्रवास के दौरान उन्होंने जैन साधु-साध्वियों के बीच रहकर जीवंत श्रमण परंपरा को समझने का प्रयास किया है। इंदौर में आयोजित साधु-सम्मेलन के दौरान श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के साधु-साध्वियों के साथ लगभग पंद्रह दिन रहना उनके इस क्षेत्रीय अध्ययन का उल्लेखनीय उदाहरण है। इस दौरान उन्होंने साधु-संघ की परंपराओं, आचार-विचार, संघ-व्यवस्था और ऐतिहासिक स्मृतियों को निकट से समझा।

अपनी भारत यात्राओं के दौरान वे प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. अमिताराय जैन के निजी संपर्क में रहकर विभिन्न स्थानों की यात्राएं भी करते हैं और स्थानकवासी परंपरा से जुड़े ऐतिहासिक स्रोतों एवं पांडुलिपियों पर विशेष शोध को आगे बढ़ाते हैं।

शहजाद राय शोध संस्थान के लिए एक नई शोध - संभावना : शहजाद राय शोध संस्थान में सुरक्षित प्राचीन जैन पांडुलिपियाँ केवल पुस्तकें नहीं, बल्कि जैन समाज के अतीत की जीवित धरोहर हैं। विशेषकर स्थानकवासी परंपरा, लोंकागच्छीय साधु-परंपराओं, आचार्य-वंशावलियों और श्रमण संघों के विकास को समझने के लिए ऐसी सामग्री अत्यंत मूल्यवान हो सकती है। यदि इन पांडुलिपियों को अंतर्राष्ट्रीय जैन अध्ययन के विशेषज्ञों के सहयोग से व्यवस्थित रूप से पढ़ा, संरक्षित और प्रकाशित किया जाता है, तो स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास का एक नया अध्याय सामने आ सकता है।

यह कार्य केवल एक शोध संस्थान या किसी एक व्यक्ति का कार्य नहीं होगा, यह पूरे स्थानकवासी जैन समाज की ऐतिहासिक विरासत को पुनः पहचानने का अभियान बन सकता है।

एक विदेशी विद्वान और हमारी अपनी विरासत : प्रो. पीटर फ्लूगेल का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है कि एक जर्मन विद्वान ने जिस गंभीरता से लोंका, लोंकागच्छ, उत्तरवर्ती लोंकागच्छीय परंपराओं से लेकर स्थानकवासी साधु-संघों और आधुनिक श्रमण संघ के इतिहास को समझने का प्रयास किया है, उसी गंभीरता से हमें भी अपनी पांडुलिपि-संपदा और ऐतिहासिक स्रोतों की ओर देखना चाहिए।

आज आवश्यकता है कि स्थानकवासी समाज अपने पुराने ग्रंथों, पांडुलिपियों, पट्टावलियों, गच्छीय दस्तावेजों और साधु - परंपराओं से संबंधित सामग्री को सुरक्षित करे, उनका डिजिटलीकरण कराए और योग्य शोधकर्ताओं के लिए उपलब्ध कराए। क्योंकि हमारी पांडुलिपियों में केवल अक्षर नहीं हैं-उनमें हमारी साधु-परंपरा की स्मृति, हमारे गच्छों का इतिहास और स्थानकवासी समाज की सदियों पुरानी पहचान सुरक्षित है। प्रो. पीटर फ्लूगेल जैसे अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों का शोध हमें इसी अमूल्य विरासत की ओर पुनः देखने का अवसर प्रदान करता है।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
Varnalaya
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

जैन समाज के ऐतिहासिक अल्प ज्ञात तथ्य श्रृंखला...

डॉ. प्राणजीवन मेहता : गांधीजी के आत्मीय मित्र और राष्ट्रसेवा के अनाम नायक

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

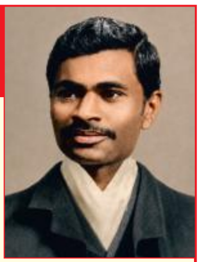

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं, जिनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होते हुए भी अपेक्षाकृत अल्पज्ञात रह गया। डॉ. प्राणजीवन मेहता ऐसा ही एक विलक्षण नाम है-जैन समाज में जन्मे चिकित्सक, विधिवेत्ता, सफल रत्न-व्यवसायी, राष्ट्रहितैषी और महात्मा गांधी के अत्यंत निकटतम मित्र।

सन् 1864 में मोरवी के प्रतिष्ठित व्यवसायी श्री जगजीवनदास मेहता के चार पुत्रों में सबसे छोटे प्राणजीवन मेहता का जन्म हुआ। मोरवी के तत्कालीन राजपरिवार से मतभेद के बाद परिवार ने मुंबई में रत्न-व्यवसाय प्रारंभ किया। उनके बड़े भाई रेवाशंकर झवेरी का मुंबई स्थित मणि भवन आगे चलकर गांधीजी की गतिविधियों का ऐतिहासिक केंद्र बना। गांधी हेरिटेज पोर्टल भी डॉ. मेहता को गांधीजी के सबसे पुराने और निकटतम मित्रों में गिनता है।

शिक्षा के प्रति असाधारण अनुराग रखने वाले डॉ. मेहता ने चिकित्सा की उच्च शिक्षा प्राप्त की और यूरोप जाकर एम.डी. तथा कानून की शिक्षा हासिल की। भारत लौटकर वे ईडर रियासत के मुख्य चिकित्साधिकारी और बाद में दीवान रहे। सन् 1899 में वे रंगून चले गए, जहाँ हीरों और जवाहरात के व्यवसाय में अत्यंत सफल हुए। साथ ही सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रहे और बर्मा के सार्वजनिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गांधीजी से आजीवन आत्मीय संबंध : गांधीजी और डॉ. मेहता का परिचय 1888 में इंग्लैंड में हुआ, जब युवा मोहनदास कानून की पढ़ाई के लिए वहाँ पहुँचे थे। यह परिचय शीघ्र ही ऐसी मित्रता में बदल गया, जो जीवनपर्यंत कायम रही। गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास से लेकर भारत में उनके राष्ट्रीय कार्यों तक डॉ. मेहता निरंतर आर्थिक और नैतिक सहयोग देते रहे।

वे गांधीजी के केवल मित्र या आर्थिक सहयोगी नहीं थे, बल्कि उनके गंभीर वैचारिक संवादकर्ता भी थे। 'हिन्द स्वराज' के निर्माण में डॉ. मेहता के साथ हुए बौद्धिक संवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही। गांधीजी के स्वराज, आधुनिक सभ्यता और भारतीय जीवन-दृष्टि संबंधी चिंतन को समझने में इस मित्रता का विशेष महत्व है।

गांधीजी को श्रीमद् राजचन्द्र से मिलाने वाले व्यक्तित्व : डॉ. प्राणजीवन मेहता के जीवन की सबसे ऐतिहासिक उपलब्धियों में गांधीजी का श्रीमद् राजचन्द्र से परिचय कराना माना जाता है। श्रीमद् राजचन्द्र से मेहता परिवार का पारिवारिक संबंध था और इसी आत्मीयता के माध्यम से गांधीजी की भेंट उस महान जैन आध्यात्मिक चिंतक से हुई। श्रीमद् राजचन्द्र के ज्ञान, वैराग्य, आत्मानुभूति और धार्मिक दृष्टि ने गांधीजी को गहराई से प्रभावित किया। आगे चलकर गांधीजी ने आध्यात्मिक संकट के क्षणों में राजचन्द्रजी से मार्गदर्शन लिया। इस प्रकार एक जैन परिवार के सदस्य डॉ. मेहता द्वारा कराया गया वह परिचय भारतीय आध्यात्मिक और राष्ट्रीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गया।

गांधीजी के कार्यों में उदार आर्थिक सहयोग : डॉ. मेहता ने गांधीजी की गतिविधियों में खुले हाथों से आर्थिक सहायता की। दक्षिण अफ्रीका के फीनिक्स सेटलमेंट से लेकर भारत में गांधीजी के रचनात्मक एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों तक उनका सहयोग निरंतर बना रहा। साबरमती आश्रम तथा गुजरात विद्यापीठ जैसे राष्ट्रीय संस्थानों के लिए उनके बड़े आर्थिक सहयोग का उल्लेख विभिन्न स्रोतों में मिलता है। यह उस समय की दृष्टि से अत्यंत बड़ी राशि थी। उनका विश्वास था कि धन का सर्वोत्तम उपयोग राष्ट्र, समाज और मानवता की सेवा में है।

भगतसिंह से जुड़ा एक रोचक प्रसंग : डॉ. प्राणजीवन मेहता के जीवन से संबंधित विभिन्न स्रोतों में सरदार भगतसिंह के मुकदमे से जुड़ा एक अत्यंत रोचक प्रसंग भी मिलता है। बताया जाता है कि उन्होंने भगतसिंह के पक्ष में वकालत की और उनके अंतिम दिनों में जेल जाकर उनसे भेंट की। भगतसिंह से संवाद के दौरान देश की स्वतंत्रता और क्रांति के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता सामने आई। इसी क्रम में डॉ. मेहता की राजगुरु और सुखदेव से भी भेंट होने का उल्लेख मिलता है।

इन प्रसंगों का विवरण विभिन्न स्रोतों में कुछ भिन्न रूपों में मिलता है, किंतु इससे इतना अवश्य स्पष्ट होता है कि डॉ. मेहता का जीवन केवल गांधीवादी राष्ट्रीय धारा तक सीमित नहीं थाय वे भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत व्यापक राष्ट्रीय चेतना के प्रति भी अत्यंत संवेदनशील थे।

जैन समाज की गौरवशाली विरासत : डॉ. प्राणजीवन मेहता का जीवन जैन समाज के लिए विशेष प्रेरणास्रोत है। उन्होंने आधुनिक चिकित्सा और कानून की शिक्षा प्राप्त की, विश्वस्तरीय व्यवसाय खड़ा किया, सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहे और अपनी संपन्नता को राष्ट्र तथा समाज के कार्यों में लगाया।

उनके जीवन में अहिंसा, अपरिग्रह, उदारता, आत्मसंयम और सेवा जैसे जैन जीवन-मूल्यों की व्यावहारिक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। सबसे बड़ी बात-उन्होंने गांधीजी को श्रीमद् राजचन्द्र जैसे महान जैन चिंतक तक पहुँचाया, जिनका प्रभाव आगे चलकर गांधीजी के सत्य, अहिंसा और आत्मसंयम के दर्शन पर गहराई से पड़ा।

सन् 1932 में 3 अगस्त की रात्रि डॉ. प्राणजीवन मेहता का निधन हुआ। वे पीछे धन-संपत्ति से कहीं अधिक मूल्यवान एक ऐसी विरासत छोड़ गए, जिसमें मित्रता, विद्या, उदारता, राष्ट्रसेवा और जैन संस्कारों का अद्भुत समन्वय था। इतिहास के पन्नों में डॉ. प्राणजीवन मेहता का नाम इसलिए विशेष रूप से स्मरणीय है कि उन्होंने स्वयं इतिहास के मंच पर खड़े होने से अधिक, इतिहास बनाने वाले महापुरुषों को जोड़ने का कार्य किया-और उनमें सबसे महत्वपूर्ण था गांधीजी को श्रीमद् राजचन्द्र से मिलाना।

डॉ. प्राणजीवन मेहता का जीवन इस बात का उज्ज्वल प्रमाण है कि जैन समाज की राष्ट्रनिर्माण परंपरा केवल व्यापार और परोपकार तक सीमित नहीं रही, बल्कि भारत के आध्यात्मिक जागरण और स्वतंत्रता आंदोलन की निर्णायक धाराओं को प्रभावित करने में भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') **समानता का अर्थ समानरूपता नहीं :** लोकतंत्र का अर्थ यह नहीं कि हर व्यक्ति की जीवन-पद्धति एक जैसी हो जाए। समानता का अर्थ है-भिन्न होते हुए भी समान सम्मान। किसी को पूजा-पद्धति के लिए अपना मंदिर चाहिए, किसी को गुरुद्वारा चाहिए, किसी को चर्च या मस्जिद के निकट रहना अच्छा लगता है। कोई धार्मिक वातावरण में बच्चों का पालन-पोषण करना चाहता है, कोई पूर्णतः आधुनिक और धर्मनिरपेक्ष वातावरण में। इसी प्रकार कोई व्यक्ति पूर्ण शाकाहारी वातावरण चाहता है।

जब तक यह आग्रह दूसरों के प्रति घृणा, हिंसा या अपमान में परिवर्तित नहीं होता, तब तक इसे सामाजिक विविधता के एक रूप के रूप में समझने की आवश्यकता है। भारतीय संविधान भी एक ओर समानता और गैर-भेदभाव के सिद्धांतों को मान्यता देता है, तो दूसरी ओर अंतःकरण तथा धर्म की स्वतंत्रता की भी गारंटी देता है।

हाँ, किसी आवासीय व्यवस्था में प्रवेश, बिक्री अथवा सदस्यता को लेकर कानून, सहकारी संस्था के नियम, पंजीकृत उपविधियाँ और संपत्ति-संबंधी वैधानिक प्रावधान लागू होते हैं। अतः प्रत्येक मामले की वैधता का निर्धारण तथ्य और कानून के आधार पर होना चाहिए, केवल सोशल मीडिया की बहस से कोई कानूनी निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। महाराष्ट्र सरकार भी सहकारी आवास संस्थाओं से संबंधित अधिनियम एवं नियमों को अलग से अधिसूचित और संचालित करती है।अपनी संस्कृति बचाइए, दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान कीजिए।

यहाँ सबसे महत्वपूर्ण अंतर समझना होगा : "हम शाकाहारी हैं और अपने जैसे जीवन-मूल्यों वाले लोगों के साथ रहना चाहते हैं"-यह एक सामुदायिक सांस्कृतिक पसंद है। जैन समाज यदि अपनी संस्कृति, धर्म, आहार और अहिंसामूलक जीवन-पद्धति को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रखना चाहता है, तो उसके लिए सामुदायिक संस्थाओं, शाकाहारी आवासीय परिसरों, धार्मिक-सांस्कृतिक केंद्रों और समान जीवन-मूल्यों वाले परिवारों के समूह विकसित करना स्वाभाविक सामाजिक प्रक्रिया हो सकती है।

संस्कृति संरक्षण और सामाजिक वैमनस्य - दो अलग-अलग बातें हैं : 'महाराष्ट्रीय बनाम गैर-महाराष्ट्रीय' का प्रश्न क्यों? इस विवाद के दौरान सोशल मीडिया पर कुछ प्रतिक्रियाओं में इसे मराठी बनाम गैर-मराठी के प्रश्न से भी जोड़ने की कोशिश हुई। NDTV की रिपोर्ट में भी इस विवाद के संदर्भ में मुंबई की 'मराठी मानुस' पहचान और खान-पान के प्रश्न को लेकर राजनीतिक प्रतिक्रियाओं का उल्लेख है। लेकिन मेरा मानना है कि इस पूरे विषय को क्षेत्रीय अस्मिता के संघर्ष में बदलना उचित नहीं होगा। मुंबई महाराष्ट्र की राजधानी है, लेकिन मुंबई केवल महाराष्ट्र की नहीं-वह पूरे भारत की आर्थिक और सांस्कृतिक नगरी है। देश के कोने-कोने से लोग यहाँ आए, बसे, परिश्रम किया और इस महानगर के निर्माण में योगदान दिया और यही बात भारत के लिए भी सत्य है। महाराष्ट्र हो या उत्तर प्रदेश, गुजरात हो या राजस्थान, पंजाब हो या तमिलनाडु-भारत सबका है। हमारी विविधताएँ हमारी दीवारें नहीं, हमारी पहचान हैं।

80 वर्ष की स्वतंत्रता के बाद आत्ममंथन : 15 अगस्त 2026 को हमने स्वतंत्र भारत की 80वीं स्वतंत्रता वर्षगाँठ मनाई है। आठ दशकों की लोकतांत्रिक यात्रा के बाद हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि यही होनी चाहिए कि हम एक-दूसरे को अपने-अपने विश्वास और जीवन-पद्धति के साथ स्वीकार करना सीखें। लोकतंत्र की पहचान यह नहीं कि सभी एक जैसा खाएँ, एक जैसा पहनें और एक जैसा सोचें।

लोकतंत्र की पहचान यह है कि अलग-अलग सोच रखने वाले लोग एक ही राष्ट्र में समान सम्मान के साथ रह सकें इसलिए यदि जैन समाज अपनी अहिंसामूलक जीवन-पद्धति के संरक्षण के लिए अपनी सोसायटी बनाता है, यदि शाकाहारी परिवार समान आहार-संस्कृति वाले लोगों के साथ रहना चाहते हैं, तो उस इच्छा को समझने की आवश्यकता है।

विवाद नहीं, विवेक चाहिए : तारदेव की घटना से हमें किसी समुदाय के विरुद्ध खड़ा होने के बजाय एक व्यापक सामाजिक शिक्षा लेनी चाहिए। अपने जैसे जीवन-मूल्यों वाले लोगों के साथ रहना चाहते हैं-तो रहिए, पर दूसरे के अस्तित्व और सम्मान को अस्वीकार मत कीजिए। भारत की सनातन चेतना ने विविधता को स्वीकार किया है। जैन दर्शन का अनेकांतवाद तो हमें और भी गहरी दृष्टि देता है-सत्य को देखने के अनेक कोण हो सकते हैं। इसलिए तारदेव के एक फ्लैट की 'Vegetarian Only' शर्त को लेकर उठे विवाद का समाधान न तो किसी एक पक्ष को विजयी घोषित करने में है, न दूसरे को कटघरे में खड़ा करने में। समाधान है, अधिकार, कानून, संस्कृति और सह - अस्तित्व - चारों के बीच संतुलन क्योंकि अपनी संस्कृति की रक्षा करना संकीर्णता नहीं, दूसरी संस्कृति का सम्मान करना उदारता है और दोनों को साथ लेकर चलना ही सच्ची भारतीयता है।

"लेख यह दावा नहीं करता कि हर प्रकार की "Vegetarian Only" शर्त स्वतः कानूनन वैध है। महाराष्ट्र में सहकारी आवास से संबंधित अपने अधिनियम, नियम और उपविधियाँ हैं, जबकि संविधान समानता तथा धार्मिक स्वतंत्रता दोनों की बात करता है।"

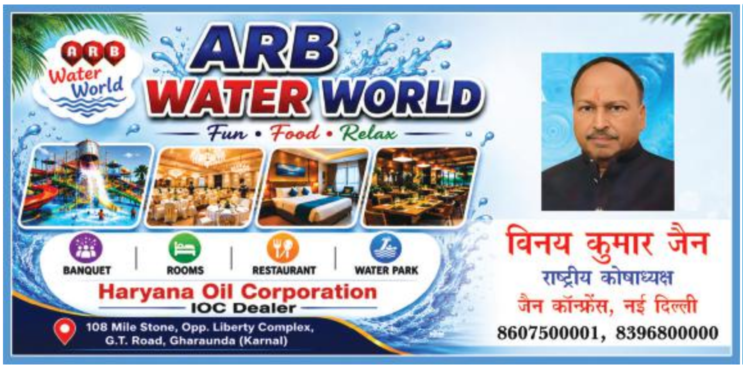

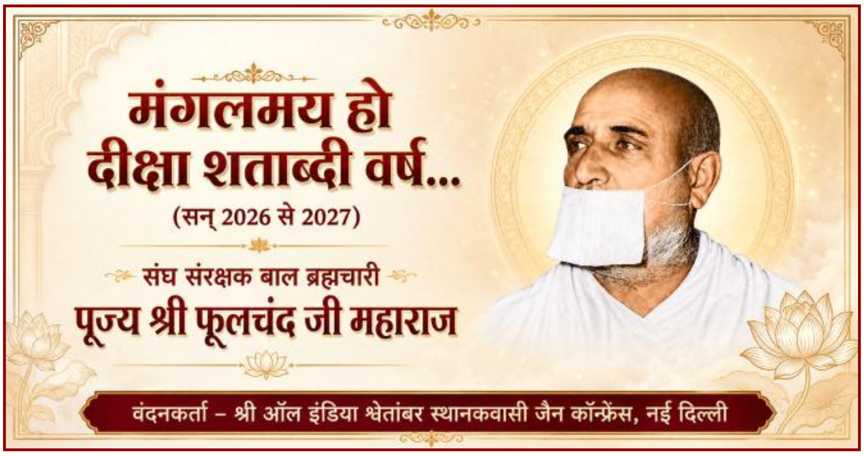

जलगांव में स्वाध्याय समागम शिविर का आयोजन

जलगांव : 14, 15 एवं 16 अगस्त को जलगांव की पावन भूमि पर आयोजित श्रमण संघ, रत्नवंश संघ, ज्ञानगच्छ एवं धर्मदास संघ के स्वाध्यायी समागम ने एक नए इतिहास का सृजन किया। चारों संप्रदायों के स्वाध्यायियों का एक मंच पर आना वास्तव में अद्वितीय, अलौकिक, अवर्णनीय एवं प्रशंसनीय अनुभव रहा। यह केवल समागम नहीं था-यह जिनशासन की एकता, स्वाध्याय की शक्ति और नई पीढ़ी के लिए नई दिशा का शुभारंभ था। कार्यक्रम का उद्घाटन जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन द्वारा कियागया।

हजारों श्रद्धालुओं के बीच गूंजा नशामुक्ति का संदेश

मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना (पंजाब) : पूज्य गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी महाराज सा. की 29वीं पुण्य स्मृति के अवसर पर आयोजित 'नशामुक्त युवा जागरण संकल्प समारोह एवं गुरु गुणगान महोत्सव' में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर एवं राजस्थान सहित विभिन्न क्षेत्रों से हजारों श्रद्धालुओं ने सहभागिता की। समारोह में 2900 सामायिक एवं दो लाख 90 हजार जाप का आध्यात्मिक संकल्प लिया गया। श्रद्धालुओं एवं समाजसेवियों ने सामाजिक सेवा कार्यों के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग भी प्रदान किया। इस अवसर पर राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने दिया नशामुक्ति का संदेश प्रदान किया। उन्होंने मुख्य अतिथि तौर पर कहा कि स्वतंत्रता तभी सार्थक है, जब हमारा मन भी नशे और बुरी आदतों से स्वतंत्र हो। उन्होंने युवाओं से नशे को पहली बार में ही दृढ़ता से 'ना' कहने तथा नशाग्रस्त लोगों के प्रति सहयोग, उपचार एवं पुनर्वास की भावना रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि महापुरुषों की सच्ची श्रद्धांजलि उनके आदर्शों को जीवन में उतारना है।

पूज्य श्री अमनमुनि जी महाराज सा. ने नशे की बढ़ती समस्या पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि युवा राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति हैं। उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहकर शिक्षा, खेल, सेवा, संस्कार एवं राष्ट्र निर्माण को जीवन का लक्ष्य बनाने का आह्वान किया। समारोह में पूज्य गुरुदेव श्री आलोकमुनि जी महाराज सा., पूज्य श्री अमनमुनि जी महाराज सा., महासती श्री शिखा जी महाराज सा., महासती श्री सौम्या जी महाराज सा. सहित अनेक संत-साध्वी भगवंतों का पावन सान्निध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। विभिन्न धर्मों एवं सामाजिक संस्थाओं की सहभागिता ने आयोजन को सर्वधर्म समभाव एवं सामाजिक एकता का स्वरूप प्रदान किया।

आयोजक : श्री एस.एस. जैन सभा,
मंडी मुल्लांपुर दाखा एवं चातुर्मास समिति

इन्दौर में मरुधर केसरी मिश्रीमलजी एवं शेर-ए-राजस्थान रूपमुनिजी की जन्म जयंती पर आयोजन

इंदौर (मध्य प्रदेश) : संकल्पमय चातुर्मास-2026 के अंतर्गत एयरपोर्ट रोड स्थित नरसिंह वाटिका में अनुष्ठान आराधिका साध्वी डॉ. श्री कुमुदलताजी महाराज साहब के पावन सान्निध्य में मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी महाराज साहब एवं शेर-ए-राजस्थान श्री रूपमुनिजी महाराज साहब का जन्म जयंती समारोह श्रद्धा एवं भावपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर दोनों महान संतों के जीवन, त्याग, तपस्या, साधना एवं जिनशासन के लिए किए गए कार्यों का गुणानुवाद किया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति से पूरा परिसर धर्ममय बना रहा।

समारोह की अध्यक्षता माननीय श्रेष्ठीवर श्री कैलाशजी विजयवर्गीय, नगरीय प्रशासन मंत्री, भोपाल ने की। उन्होंने संतों के प्रति अपनी श्रद्धा एवं भाव व्यक्त करते हुए कहा कि उनका महाराजश्री के प्रति गहरा आस्था भाव है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फिल्म निर्माता श्री के.सी. बोकाडिया, मुंबई ने मरुधर केसरी के प्रति अपने भाव व्यक्त किए। समारोह की विशेष उपस्थिति बॉलीवुड अभिनेत्री प्रीति झंगियानी, मुंबई की रही। कार्यक्रम का संचालन श्री जिनेश्वर जैन ने किया। प्रेषक : जिनेश्वर जैन

जय आनंद मधुकर रतन भवन में 50 परीक्षार्थियों ने दी परीक्षा

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : जय आनंद मधुकर रतन भवन, बांधा तालाब, दुर्ग में राष्ट्रसंत, मानव मिलन संस्थापक श्री मणिभद्र मुनि जी महाराज एवं साध्वी श्री लक्ष्मी जी म. के पावन सान्निध्य में श्रमण संघीय जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित 'जैन संस्कार आरोहण पाठ्यक्रम' की धार्मिक परीक्षा संपन्न हुई। परीक्षा में दुर्ग केंद्र पर लगभग 50 परीक्षार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपने धार्मिक ज्ञान और संस्कारों को समृद्ध करने का संकल्प लिया। श्रमण संघीय जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड द्वारा यह परीक्षा 9 अगस्त, रविवार को दोपहर 1:30 से 4:30 बजे तक देशभर के विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर एक साथ आयोजित की गई। छत्तीसगढ़ सहित भारत के अनेक क्षेत्रों में परीक्षार्थियों ने इस परीक्षा में भाग लिया। विशेष बात यह रही कि अनेक प्रतियोगी पूरे वर्ष नियमित अध्ययन एवं तैयारी करते रहे और परीक्षा के माध्यम से अपने धार्मिक ज्ञान का मूल्यांकन किया।

इस धार्मिक परीक्षा के आयोजन के पीछे सत्प्रेरिका एवं मार्गदर्शिका परम विदुषी महासती डॉ. हेमप्रभा जी म. का मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा रही, जिसके प्रति आयोजकों एवं परीक्षार्थियों ने कृतज्ञता व्यक्त की। दुर्ग के जय आनंद मधुकर रतन भवन में परीक्षा को व्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न कराने में कविता रतनबोहरा, श्रीमती मंजु सुराणा ऋषिका गोलक्षा का विशेष सहयोग रहा। सभी परीक्षार्थियों ने शांतिपूर्ण वातावरण में परीक्षा देकर धार्मिक अध्ययन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। प्रेषक : नवीन संचेती

चित्तौड़गढ़ में आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. की 127वीं जन्म जयंति मनाई गई

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) : सेंती शांति भवन में जैन सिद्धान्ताचार्य पूज्य साध्वीवर्या श्री प्रतिभाश्री जी म. आदि ठाणा की प्रेरणा से श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट पूज्य गुरुदेव आनंदऋषि जी म. की 127वीं जन्म जयन्ति आयम्बिल तप की आराधना के साथ मनाई गई। लगभग 60 आयम्बिल हुए जिसका लाभ श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली राजस्थान प्रान्तीय महिला कोषाध्यक्षा अंगूरबाला भड़कतिया ने लिया। शाखा की प्रान्तीय मंत्री सरोज नाहर, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री विनिता लोढ़ा, योजना मंत्री सुमन चीपड़, भावना कोठारी, नगीना मेहता, दिलखुश खैरोदिया, पायल गिलुण्डिया, मिनाक्षी मेहता रेखा जारौली, संगीता चीपड़ आदि बहनें उपस्थित थीं। प्रेषक : पवन जैन पटवारी

सरलमना संत भंते श्री पारसमुनि जी म. का प्रेम भवन करोल बाग दिल्ली में देवलोकगमन

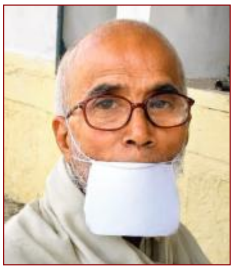

देवभूमि उत्तराखण्ड की रमणीय वादियों में बसे टिहरी गढ़वाल जिले के ग्राम पैनुला, पट्टी अकरी, तहसील देवप्रयाग की पावन धरती पर एक ऐसे संत का जन्म हुआ, जिनका सम्पूर्ण जीवन धर्म, साधना, सेवा, अध्ययन, विनम्रता और समता की प्रेरणादायी यात्रा रहा।

पिता श्री हेमानंद डंगवाल एवं माता श्रीमती नन्दा देवी डंगवाल ब्राह्मण कुल के संस्कारमय परिवार में 27 अक्टूबर 1940 को जन्मे बालक का नाम नित्यानंद डंगवाल रखा गया। बाल्यकाल से ही गुरुदेव श्री हनुमान जी के भक्त थे जिस कारण उनमें सरलता, सहजता और आध्यात्मिक संस्कारों के बीज दिखाई देने लगे थे।

समय के साथ सांसारिक जीवन के प्रति वैराग्य की भावना प्रबल होती गई। आत्मकल्याण की दिशा में बढ़ते हुए उन्होंने लगभग सात माह तक वैराग्य अवस्था में रहकर अपने जीवन को साधना के लिए तैयार किया। अंततः 20 सितम्बर 1969 को चाँदनी चौक के परेड ग्राउंड में उन्होंने आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज साहब के सान्निध्य में जैन श्रमण परम्परा में दीक्षा ग्रहण की। परम पूज्य गुरुदेव श्री बनवारी लाल जी महाराज साहब के शिष्य बने नित्यानंद डंगवाल का लौकिक जीवन पीछे छूट गया और वे धर्म एवं आत्मसाधना के पथ पर समर्पित हो गए।

अध्ययन और ज्ञान-साधना : भंते श्री पारस मुनि जी महाराज साहब ने जैन दर्शन के साथ-साथ अन्य दर्शनों का भी गहराई से अध्ययन किया। वे ज्ञान को केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रखते थे, बल्कि उसे अपने आचरण में उतारने का प्रयास करते थे। भंते श्री पारस मुनि जी महाराज साहब के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषताओं में सरलता, विनम्रता, समता और सेवा प्रमुख थी। सभी के प्रति सम्मान और आत्मीयता यह उनके सहज स्वभाव का हिस्सा था।

भंते श्री पारस मुनि जी महाराज साहब का जीवन गुरु-भक्ति और गुरु-सेवा से भी विशेष रूप से जुड़ा रहा। प्रेम भवन, करोल बाग में उन्होंने कुल 25 चातुर्मास किए। इनमें पंजाब केसरी दादा गुरुदेव स्वामी श्री प्रेमचन्द जी महाराज साहब की सेवा में 4 चातुर्मास, तथा तत्त्वचिंतक, उपप्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री बनवारी लाल जी महाराज साहब की सेवा में 14 चातुर्मास रहे। इसके अतिरिक्त 7 चातुर्मास स्वतंत्र रूप से संपन्न किए। गुरुजनों की सेवा में बिताया गया यह दीर्घकाल उनके जीवन की अमूल्य संयम साधना का परिचायक है। गुरु के प्रति श्रद्धा, आज्ञा के प्रति निष्ठा और सेवा के प्रति समर्पण उनके व्यक्तित्व में सदैव दिखाई देता रहा।

करोल बाग में अंतिम विराम : 26 फरवरी 2021 से 20 अगस्त 2026 तक भंते श्री पारस मुनि जी महाराज साहब करोल बाग में विराजमान रहे। इस अवधि में उन्होंने अपनी संयम साधना, और सरलता से अनेक श्रावक - श्राविकाओं को लाभान्वित किया। अंततः 20 अगस्त 2026 को सायं 7:30 बजे उन्होंने इस नश्वर देह का त्याग कर उच्च गति की ओर प्रस्थान किया और पीछे छोड़ गए-संयम, सेवा, गुरु-भक्ति, सरलता और समता की ऐसी विरासत, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनी रहेगी।

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव को लेकर पूज्य आचार्यश्री जी एवं युवाचार्यश्री जी के दर्शनार्थ पहुंचा राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल

सूरत/भीलवाड़ा : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय पदाधिकारियों का दो दिवसीय संत दर्शन एवं प्रवास कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रतिनिधिमंडल में राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जैन एवं राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन शामिल रहे।

प्रतिनिधिमंडल ने सूरत में विराजमान श्रमण संघ के आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज के दर्शन कर उनका आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस अवसर पर श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष तथा आचार्यश्री जी के जन्मोत्सव कार्यक्रम को लेकर सूरत श्रीसंघ के पदाधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा-वार्ता हुई। कार्यक्रमों की रूपरेखा एवं आयोजन को लेकर आवश्यक चर्चा की गई।

इसके पश्चात प्रतिनिधिमंडल राजस्थान के भीलवाड़ा पहुँचा, जहाँ चातुर्मास हेतु विराजित श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेंद्रऋषि जी महाराज एवं साधु-साध्वीवृंद के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। यहाँ भी श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष एवं आचार्यश्री जी के जन्मोत्सव कार्यक्रमों सहित विभिन्न संगठनात्मक विषयों पर सार्थक चर्चा-वार्ता हुई।

दो दिवसीय इस संत दर्शन एवं प्रवास कार्यक्रम में संतों के मार्गदर्शन के साथ श्रीसंघों के पदाधिकारियों से समन्वय स्थापित कर आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण विचार-विमर्श हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन के मार्गदर्शन में संपन्न इस प्रवास को संगठनात्मक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी एवं सफल बताया गया।

- जैन प्रकाश संपादकीय टीम

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

सुश्रावक श्री भागचंद जी जैन का संथारा सहित देवलोकगमन

लोणार (महाराष्ट्र) : लोणार श्रीसंघ के सुश्रावक श्रीमान भागचंदजी लादूराम जी गेलडा उम्र 75वर्ष दिनांक 19/08/2026 को पू. श्री चैतन्यश्रीजी म. के मुखारविन्द से संथारा दिया था। उनका संथारा सहित देवलोकगमन हो गया। प्रेषक : गेलडा परिवार

सुश्रावक श्री नरेश जी जैन 'रिंढ़ाना' का देवलोकगमन

दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री सुश्रावक श्री नरेश जी जैन 'रिंढ़ाना' का सोमवार 17 अगस्त को प्रातः स्वर्गवास हो गया। वे काफी समय से जैन कॉन्फ्रेंस के साथ जुड़कर धार्मिक, सामाजिक सेवाएं प्रदान करते आ रहे थे।

श्री प्रवीण 'लालाभाऊ' चांदमल सांखला जैन का स्वर्गवास

नासिक (महाराष्ट्र) : आर.के. श्रीसंघ के आधारस्तंभ, अरिहंत प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ. प्रदीपजी एवं प्रफुल्ल सांखला जैन के भाई श्री प्रवीण (लालाभाऊ) चांदमलजी सांखला जैन मुंबई मे दुःखद निधन।

श्री मिठुलाल मिश्रीलाल बोरा जैन का स्वर्गवास

पुणे (महाराष्ट्र) : लोणीकंद विराजित महासाध्वी श्री प्रेरणाजी म. के पिता धर्मप्रेमी, सुश्रावक श्री मिठुलालजी मिश्रीलालजी बोरा जैन का 84 वर्ष की आयु में संथारा सहित देवलोक गमन हो गया। महासाध्वी श्री जयस्मिताजी म. ने अपने मुखारविंद से उनको संथारा व्रत दिया था। संथारा व्रत की रविवार, दिनांक 9 अगस्त सुबह 4 बजे पुर्णाहुती हुई। प्रेषक : बोरा परिवार

श्रीमान् लक्ष्मीलाल सिसोदिया जैन का स्वर्गवास

मुंबई (महाराष्ट्र) : भूताला मुंबई निवासी श्री मुकेश, श्री हितेश के पिताजी श्री बाबूलाल लक्ष्मीलालजी सिसोदिया जैन का आकस्मिक निधन हो गया है। प्रेषक : सिसोदिया परिवार

श्री भंवरलाल कोठारी जैन का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : सुश्रावक श्री भंवरलाल जी कोठारी जैन का शुक्रवार, दिनांक 21 अगस्त को दोपहर में स्वर्गवास हो गया। प्रेषक : सुरेश कोठारी जैन

सुश्राविका श्रीमती शांतादेवी नलवाया का स्वर्गवास

डूंगला (राजस्थान) : मूलतः डूंगला निवासी श्री शांतिलालजी नलवाया (जैन) की धर्मपत्नी, सुश्राविका श्रीमती शांतादेवी नलवाया का 18 अगस्त मंगलवार को 75 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। मरणोपरांत उनका नेत्रदान भी किया गया। प्रेषक : दिलीप धींग जैन

सुश्राविका श्रीमती प्रेमबाई जैन का स्वर्गवास

अहमदाबाद (गुजरात) : पोटला निवासी एवं अहमदाबाद प्रवासी बालचन्द मिश्रीलाल अशोककुमार गौतमकुमार पवनकुमार पिछोलिया की माताजी एवं स्व. श्री वरदीचंद जी पिछोलिया जैन की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमबाई जी पिछोलिया जैन का 07 अगस्त को स्वर्गवास हो गया।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

कविता का कोना

वाणी में करुणा थी, आँखों में सत्य का उजियारा था,
हर पीड़ित के लिए आपका हृदय ही सहारा था।
आप चले तो राहें भी श्रद्धा से झुकती चली गई,
हे गुरु रूप रजत! आपका जीवन स्वयं धर्म का उजियारा था।।

श्रमण संघ के वरिष्ठ प्रवर्तक लोकमान्य राष्ट्रसंत शेरे राजस्थान अहिंसा दिवाकर प्रज्ञा पुरुषोत्तम जैन जगत के उज्ज्वल नक्षत्र परम पूज्य गुरुदेव श्री रूपचंद जी म.सा. 'रजत' के जन्मोत्सव दिवस पर उनके संयमी में जीवन को कोटि-कोटि नमन !

- श्री वरुण मुनि जी

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 22-08-2026
Date of Posting : 28/29-08-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ❊ अंक : 24 ❊ पृष्ठ : 8
माह : अगस्त ❊ सप्ताह : 22 अगस्त से 28 अगस्त
मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

राय बहादुर सेठ लाला न्यादरमल जी जैन 'रईस' : संयुक्त प्रांत के स्थानकवासी समाज की धुरी और धर्म-ज्ञान परंपरा के संरक्षक

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

ब्रिटिशकालीन संयुक्त प्रांत, अर्थात् वर्तमान पश्चिमी उत्तर प्रदेश के स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में राय बहादुर सेठ लाला न्यादर मल जी जैन का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली और गौरवपूर्ण रहा है। वे बिनौली के प्रतिष्ठित जमींदार, धर्मनिष्ठ श्रावक, वरिष्ठ पंच और स्थानकवासी समाज के प्रमुख संरक्षक थे। उनके लिए संपत्ति व्यक्तिगत वैभव का साधन न होकर धर्म, समाज और श्रमण परंपरा की सेवा का माध्यम थी।

चार वरिष्ठ पंचों में सबसे अग्रणी : उस समय संयुक्त प्रांत के स्थानकवासी जैन समाज में चार प्रमुख वरिष्ठ पंचों को विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त थी-बिनौली के लाला न्यादरमल जी जैन, कांधला के लाला घमंडीलाल जी जैन, बड़ौत के लाला सुल्तान सिंह जी जैन तथा निरपुड़ा के लाला लखूराम जी जैन। ये चारों स्थानकवासी जैन श्रावक समाज की धुरी माने जाते थे। सामाजिक सद्भाव बनाए रखना, विभिन्न जैन परंपराओं के मध्य सौहार्द बनाए रखना, आवश्यकता पड़ने पर समाज की धार्मिक-सामाजिक अस्मिता की रक्षा करना तथा स्थानकवासी जैन परिवारों के हितों का संरक्षण करना उनके प्रमुख दायित्वों में था। आयु में सबसे वरिष्ठ होने के कारण लाला न्यादरमल जी सरपंच के रूप में प्रमुख दायित्व संभालते थे।

उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वे अपने कारिंदों के साथ रथ, घोड़े अथवा हाथी पर सवार होकर विभिन्न ग्रामों और नगरों में जाते थे। उनके साथ पत्र-व्यवहार लिखने वाला लेखक रहता, जो उनके आदेश से पत्र लिखकर उस पर उनकी मोहर लगाता और संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाता था। यह उस युग के उनके सामाजिक प्रभाव और वैभव की सजीव झलक है।

बिनौली का भव्य स्थानक : लाला न्यादरमल जी के पूर्वज सोनीपत क्षेत्र से गंगेरू होते हुए बिनौली आए और यहाँ भूमि, हवेलियों तथा जमींदारी की स्थापना की। इसी समृद्ध पारिवारिक विरासत को उन्होंने धर्मसेवा का माध्यम बनाया। लगभग 106 वर्ष पूर्व, सन् 1920 के आस-पास, उन्होंने अपनी व्यावसायिक संपत्ति धर्मकार्य के लिए समर्पित कर निर्माण का भी सौजन्य लाभ लेते हुए बिनौली में भव्य जैन स्थानक का निर्माण कराया। मकराना के श्वेत संगमरमर से निर्मित गवाक्ष, कंगूरे और विशाल कलात्मक द्वार इसकी स्थापत्य गरिमा के प्रमाण बने। यह स्थानक आज भी उनके धर्मप्रेम और दानशीलता की अमर स्मृति है।

लाला जी द्वारा सन 1920 में निर्मित 106 वर्ष प्राचीन श्री जैन स्थानक बिनौली (जिला बागपत) उत्तर प्रदेश

लुहारा सराय का प्रेरणादायी प्रसंग : अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर लाला न्यादरमल जी बारात लेकर लुहारा सराय पहुँचे। पारिवारिक परंपरा के अनुसार उनके पौत्र लाला शहजाद राय जी जैन अपने मस्तक पर धारण करके स्वर्ण कलश लेकर वहाँ के स्थानक पर समर्पित करने हेतु गए, किंतु उस समय वहाँ स्थानक बना ही नहीं था। इसी प्रसंग में कुछ महिलाओं द्वारा स्थानकवासी परंपरा का उपहास किया गया। लाला न्यादरमल जी ने इसे व्यक्तिगत अपमान न मानकर धर्म के प्रति अपने दायित्व का प्रश्न माना। उन्होंने विवाह की रस्में रोककर तत्काल स्थानक के लिए भूमि क्रय कराई। बिनौली के स्थानक के लिए बनवाया गया भव्य संगमरमर का द्वार लुहारा सराय ले जाकर स्थापित कराया और उसके ऊपर त्रिमंजिला स्थानक का निर्माण करवाकर स्वर्ण कलश स्थापित कराया। जहाँ किसी ने उपहास देखा, वहाँ लाला न्यादरमल जी ने धर्मनिर्माण का अवसर देखा।

दो शताब्दियों पुरानी पांडुलिपि-धरोहर : लाला न्यादरमल जी को पारिवारिक विरासत के रूप में प्राचीन स्थानकवासी जैन परंपरा का महत्वपूर्ण पांडुलिपि-भंडार प्राप्त हुआ था। कालांतर में स्थानकवासी परंपरा के विभिन्न प्रदेशों एवं परंपराओं के अनेक आचार्य एवं संत बिनौली पधारते रहे और अपने-अपने प्रदेशों एवं परंपराओं से संबंधित पांडुलिपियाँ यहाँ सुरक्षित रखते रहे। साथ ही, यहाँ पर पूर्व से संचित ग्रंथों का अध्ययन करने हेतु ग्रहण भी करते रहे।

इस प्रकार बिनौली का यह भंडार विभिन्न प्रांतों की स्थानकवासी श्रमण परंपराओं और धार्मिक साहित्य का एक विशिष्ट पांडुलिपि-संगम बन गया। यह धरोहर परंपरागत रूप से आगे बढ़ते हुए वर्तमान में मेरे (डॉ. अमितराय जैन के) संरक्षण में है। सन् 1994 में लाला शहजाद राय जी जैन के स्वर्गवास के पश्चात् उनकी धर्मपत्नी एवं आदर्श सुश्राविका श्रीमती कैलादेवी जैन ने यह पांडुलिपि-धरोहर मुझे (डॉ. अमितराय जैन) को सौंपी। इस प्रकार लगभग दो शताब्दियों की यह ज्ञान-परंपरा आज भी सुरक्षित है।

बत्तीस आगमों के हिंदी प्रकाशन में प्रेरक भूमिका : आचार्य श्री अमोलकऋषि जी महाराज द्वारा विश्व में प्रथम बार हिंदी में अनूदित बत्तीस आगमों के प्रकाशन में भी लाला न्यादरमल जी की प्रेरक एवं समन्वयकारी भूमिका रही। मनोहर परंपरा के संतों की प्रेरणा से उन्होंने इस धार्मिक कार्य के लिए आर्थिक सहयोग जुटाने की प्रेरणा और व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा सहयोग की प्रेरणा सेठ सुखदेव सहाय जी और उनके पुत्र सेठ ज्वालाप्रसाद जी तक पहुँचाई। इसके उपरांत ही पूज्य आचार्य श्री अमोलकऋषि जी महाराज सिंध प्रांत के हैदराबाद नगर में ला. ज्वालाप्रसाद जी की निमंत्रण पर 4 वर्ष हेतु वहाँ पहुंचे और इस महान कार्य को संपन्न किया। इस प्रकार वे केवल स्वयं धर्मकार्य करने वाले श्रावक ही नहीं, बल्कि अन्य समर्थ श्रावकों को भी महान धार्मिक कार्यों के लिए प्रेरित करने वाले कुशल समन्वयक थे।

मनोहर परंपरा और संगठनात्मक योगदान : लाला न्यादरमल जी मनोहर परंपरा के संतों के अनन्य उपासक थे। लाला गोकुलचंद जी नाहर चाँदनी चौक दिल्ली और सेठ ज्वालाप्रसाद जी हैदराबाद जैसे समकालीन प्रमुख श्रावकों के साथ उन्होंने स्थानकवासी समाज के संगठनात्मक कार्यों को सुदृढ़ किया। लाला गोकुलचंद जी नाहर के आग्रह पर उन्होंने अपने पूर्वजों की भूमि सोनीपत में हलवाई हट्टा स्थित जैन स्थानक का निर्माण भी कराया। सन् 1932 के प्रथम अजमेर साधु-सम्मेलन की आयोजन समिति में संयुक्त प्रांत के प्रतिनिधि प्रमुख श्रावकों में लाला न्यादरमल जी जैन का सम्मिलित होना उनके व्यापक संगठनात्मक योगदान का प्रमाण है। इस घटना का भी लिखित प्रमाण मिलता है कि लालाजी उस समय अजमेर साधु-सम्मेलन के लिए आयोजित चाँदनी चौक बारादरी जैन स्थानक में आयोजित बैठक में हाथी पर चाँदी के होदे पर सवार होकर शानो शौकत के साथ पहुंचे थे।

संथारा-सल्लेखना - जीवन का आध्यात्मिक उपसंहार : लाला न्यादरमल जी के पिता लाला तुलसीराम जी आचार्य श्री मोतीलाल जी महाराज के अनन्य श्रद्धालु थे और उन्होंने जीवन के अंतिम समय में संथारा-सल्लेखना कराने के लिए निवेदन किया था। समय आने पर आचार्यश्री स्वयं बिनौली पधारे और उनकी संथारा-साधना संपन्न करने हेतु वही चातुर्मास किया। इसी आध्यात्मिक संस्कार को आगे बढ़ाते हुए लाला न्यादर मल जी ने भी सन् 1940 में दो दिवस का संथारा ग्रहण कर अपने जीवन का आध्यात्मिक उपसंहार किया। उनका अंतिम संस्कार उनकी अंतिम इच्छा के मुताबिक हिंडन और कृष्णा नदी के संगम स्थल के निकट किया गया।

छह पीढ़ियों तक चली स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की सेवा-परंपरा : लाला न्यादरमल जी के पुत्र स्व. लाला गिरिलाल जी जैन भी बड़े धर्मनिष्ठ श्रावक रहे। उनके पुत्र स्वर्गीय लाला शहजाद राय जी जैन बिनौली से बड़ौत आए और स्थानकवासी समाज की धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षिक गतिविधियों को नई दिशा दी। वे स्थानकवासी गर्ल्स डिग्री कॉलेज के संस्थापक अध्यक्ष रहे। जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व अध्यक्ष श्री पुखराजमल लुंकड़ जी की प्रेरणा से वे जीवन प्रकाश योजना के प्रारंभिक आधार स्तंभ भी बने। लाला शहजाद राय जी के पुत्र ला. सुरेशचंद जी जैन भी समाज के प्रति अपनी सेवाभावना से जुड़े हुए हैं। उनकी जैन कॉन्फ्रेंस की लाइफ मेंबरशिप संख्या 112 है।

इस प्रकार इस परिवार का जैन कॉन्फ्रेंस से संबंध पिछली छह पीढ़ियों से निरंतर चला आ रहा है। वर्तमान में लाला शहजाद राय जी के पौत्र एवं लाला सुरेशचंद जी जैन के पुत्र मैं स्वयं (डॉ. अमित राय जैन) श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में अपनी कुछ सेवाएं प्रदान कर रहा हूँ। मैं लगभग 30 वर्षों से जैन कॉन्फ्रेंस की सेवा-गतिविधियों में समर्पित रहते हुए सन् 1999 में राष्ट्रीय युवा महामंत्री, सन् 2010 में राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष के रूप में संगठन की सेवा प्रदान करता रहा हूँ।

हमारे परिवार की सेवाओं का यह क्रम बताता है कि ज्ञात रूप से लाला न्यादरमल जी द्वारा प्रारंभ की गई धर्म और समाजसेवा की चेतना केवल एक पीढ़ी तक सीमित नहीं रही, बल्कि निरंतर आगे बढ़ती हुई आज भी जीवंत है। राय बहादुर सेठ लाला न्यादरमल जी जैन का जीवन संपन्नता, सामाजिक नेतृत्व, धर्मनिष्ठा, ज्ञान-संरक्षण और श्रमण-सेवा का अद्भुत समन्वय था।

उनकी सबसे बड़ी विरासत केवल भवन या संपत्ति नहीं, बल्कि धर्मसेवा की वह अखंड परंपरा है, जो छह पीढ़ियों से स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की सेवा के रूप में आज भी प्रवाहित है।

(संदर्भ-जैन कॉन्फ्रेंस रजत स्मारिका (गुजराती), जैन कॉन्फ्रेंस स्वर्ण जयंती ग्रंथ, जिला मेरठ गैजेट 1909)

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन — महामंत्री — कोषाध्यक्ष

अभय जैन — अतुल जैन — अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित। केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ❊ सम्पर्क : 90197 31906